ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in September 2025

# भारत–पाक शांति प्रक्रियाः अतीत, वर्तमान और भविष्य

अभिनन्दन कुमार चौबे, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

## सारांश

भारत और पाकिस्तान के बीच शांति प्रक्रिया दक्षिण एशिया की स्थिरता, सुरक्षा, और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। 1947 के विभाजन के बाद से दोनों देशों के बीच शत्रुता, संदेह, और संघर्ष की जटिल परंपरा रही है। यद्यपि समय–समय पर संवाद और शांति प्रयासों की पहल की गई, जैसे ताशकंद समझौता (1966), शिमला समझौता (1972), लाहौर बस यात्रा (1999), और आगरा शिखर सम्मेलन (2001), किंतु कोई भी प्रयास स्थायी समाधान तक नहीं पहुँचा। 2014 के बाद के दशक में भारत–पाक संबंधों की दिशा निर्णायक रूप से बदली। नरेंद्र मोदी सरकार के आने के साथ भारत की विदेश नीति अधिक "सुरक्षा–केंद्रित यथार्थवाद" की ओर मुड़ी, जबकि पाकिस्तान की राजनीति में सैन्य वर्चस्व और आतंकवाद के प्रति दोहरे रवैये ने शांति प्रक्रिया को लगभग ठहरा दिया। उरी (2016), पठानकोट (2016), पुलवामा (2019) और अनुच्छेद 370 के निरस्तीकरण (2019) जैसी घटनाओं ने संवाद के सभी रास्ते बंद कर दिए। फिर भी, 2021 में सीमा–विराम समझौते (Ceasefire Reaffirmation) जैसी घटनाएँ यह संकेत देती हैं कि दोनों देश पूर्ण टकराव की स्थिति नहीं चाहते।

इस शोध–पत्र का उद्देश्य है, अतीत की शांति प्रक्रियाओं का विश्लेषण, वर्तमान गतिरोध का मूल्यांकन, और भविष्य में शांति पुर्नस्थापना की संभावनाओं की खोज।

**मुख्य शब्दः– भारत–पाक संबंध, शांति प्रक्रिया, कश्मीर विवाद, आतंकवाद, कूटनीति, सीमा–विराम, संवाद नीति, दक्षिण एशिया।**

## परिचय

भारत–पाकिस्तान संबंधों का इतिहास युद्ध, संघर्ष और संवाद–विफलता से भरा हुआ है। विभाजन के पश्चात ही दोनों देशों के बीच अविश्वास की दीवार खड़ी हो गई थी, जिसने समय के साथ कई युद्धों (1947, 1965, 1971, और 1999) का रूप लिया। इन युद्धों ने केवल सीमाएँ नहीं बदलीं, बल्कि मानसिकता को भी बाँट दिया। भारत ने सदैव "शांति और सह–अस्तित्व" की नीति अपनाई, जबकि पाकिस्तान की विदेश नीति मुख्यतः "भारत–विरोध" पर आधारित रही। दोनों देशों के बीच संवाद के अनेक दौर चले,

ताशकंद समझौता (1966): सोवियत मध्यस्थता में युद्धविराम के बाद शांति स्थापित करने का प्रयास।

शिमला समझौता (1972): युद्धोत्तर संबंधों में द्विपक्षीय समाधान का सिद्धांत।

लाहौर समझौता (1999): अटल बिहारी वाजपेयी और नवाज शरीफ की पहल, जिसने आशा जगाई।

आगरा शिखर सम्मेलन (2001): जनरल परवेज मुशर्रफ के साथ संवाद, जो आतंकवाद पर असहमति के कारण असफल रहा।

किंतु इन सभी प्रयासों के बावजूद, आतंकवाद और सीमा–पार हिंसा ने शांति प्रक्रिया को बार–बार कमजोर किया। 2014 के बाद भारत–पाक शांति प्रक्रिया ने एक निर्णायक मोड़ लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की शपथ–ग्रहण समारोह में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की उपस्थिति ने एक सकारात्मक संकेत दिया, किंतु उसी वर्ष से सीमा उल्लंघन और आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ने लगीं। 2016 के उरी हमले और उसके बाद भारत द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब "आतंकवाद के साथ संवाद" को स्वीकार नहीं करेगा। 2019 में अनुच्छेद 370 के निरस्तीकरण के बाद पाकिस्तान ने भारत के साथ सभी व्यापारिक और कूटनीतिक संबंध समाप्त कर दिए। भारत ने स्पष्ट रूप से यह घोषित किया कि कश्मीर भारत का आंतरिक विषय है और किसी भी बाहरी हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं किया जाएगा। इस निर्णय ने शांति प्रक्रिया को पूर्णतः ठहरा दिया।

इसके बावजूद, कुछ कूटनीतिक संकेत बताते हैं कि भारत और पाकिस्तान दोनों अपने–अपने घरेलू दबावों को देखते हुए पूर्ण शत्रुता नहीं चाहते। 2021 में दोनों देशों ने सीमा–विराम के पालन पर सहमति जताई, जो भविष्य की शांति की संभावनाओं की ओर एक छोटा, किंतु महत्वपूर्ण कदम था।

## ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों का इतिहास 1947 में हुए विभाजन की त्रासदी से आरंभ होता है। यह विभाजन केवल भौगोलिक सीमाओं का नहीं, बल्कि राजनीतिक और वैचारिक ध्रुवीकरण का परिणाम था। भारत ने लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष राज्य–व्यवस्था अपनाई, जबकि पाकिस्तान ने स्वयं को "इस्लामी गणराज्य" के रूप में परिभाषित किया। विभाजन के साथ ही कश्मीर का प्रश्न दोनों देशों के बीच संघर्ष का स्थायी केंद्र बन गया। 1947–48 के प्रथम युद्ध से लेकर 2013 तक दोनों देशों के बीच संवाद और

टकराव की श्रृंखला जारी रही। इन छह दशकों में युद्ध, सीमा–विवाद, आतंकवाद, और वैचारिक असहमति ने शांति प्रक्रिया को लगातार बाधित किया। फिर भी, प्रत्येक संघर्ष के बाद दोनों देशों ने संवाद के मार्ग खोजने का प्रयास किया, जो यह दर्शाता है कि शांति की चाह दोनों ओर मौजूद थी, भले ही वह टिकाऊ नहीं रही।

**प्रथम चरणः युद्ध और ताशकंद समझौता (1947–1966)**

1947–48 का प्रथम कश्मीर युद्धः–विभाजन के तुरंत बाद पाकिस्तान समर्थित कबायली हमले के कारण भारत को सैन्य हस्तक्षेप करना पड़ा। भारत ने संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता स्वीकार की, जिसके परिणामस्वरूप युद्धविराम हुआ और कश्मीर दो भागों में बँट गया, "भारतीय प्रशासित जम्मू–कश्मीर" और "पाकिस्तानी कब्जे वाला कश्मीर (POK)"। यह विभाजन आगे चलकर स्थायी राजनीतिक विवाद का कारण बना।

ताशकंद समझौता (1966)ः–1965 के युद्ध के बाद सोवियत मध्यस्थता में भारत–पाक के बीच ताशकंद समझौता हुआ। भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान ने समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते ने युद्धविराम और सीमाओं पर स्थिति पूर्ववत रखने पर सहमति दी।

परिणामः–हालाँकि समझौते ने तत्काल युद्ध रोका, किंतु दोनों देशों के भीतर अविश्वास की भावना समाप्त नहीं हुई। पाकिस्तान ने इसे रणनीतिक असफलता माना, जबकि भारत में शास्त्री जी की आकस्मिक मृत्यु ने राजनीतिक शून्य पैदा कर दिया।

**द्वितीय चरणः शिमला समझौता और बांग्लादेश संकट (1971–1977)**

1971 का युद्ध और बांग्लादेश का निर्माणः–1971 का भारतदृपाक युद्ध इतिहास का सबसे निर्णायक संघर्ष था। पूर्वी पाकिस्तान में राजनीतिक दमन और बांग्ला राष्ट्रवाद के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई ने गृहयुद्ध का रूप ले लिया। भारत ने मानवतावादी कारणों से हस्तक्षेप किया, जिसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश का निर्माण (16 दिसंबर 1971) हुआ। यह घटना पाकिस्तान के लिए ऐतिहासिक झटका थी। इसके बाद भारत और पाकिस्तान ने 1972 में शिमला समझौते पर हस्ताक्षर किए।

शिमला समझौता (1972)ः–प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच हुआ यह समझौता भारत–पाक शांति प्रक्रिया की नई नींव बना। समझौते के मुख्य बिंदु थेः–

- विवादों का समाधान केवल द्विपक्षीय वार्ता से होगा।
- नियंत्रण रेखा (Line of Control) को स्वीकार किया गया।
- युद्धबंदियों की वापसी और सामान्य संबंधों की बहाली।

परिणामः–शिमला समझौते ने भारतदृपाक संबंधों में संवाद की नीति को संस्थागत रूप दिया, परंतु यह भी केवल कागजों तक सीमित रहा। पाकिस्तान की घरेलू राजनीति में इस समझौते को "हार का दस्तावेज" कहा गया, जिससे भविष्य में उसकी स्वीकृति कमजोर हुई।

**तृतीय चरणः विश्वास निर्माण और सैन्य शासन (1977–1999)**

जनरल जिया–उल–हक और क्रिकेट कूटनीतिः– 1977 में पाकिस्तान में सैन्य शासन की वापसी हुई। जनरल जिया–उल–हक ने "इस्लामीकरण" की नीति अपनाई, किंतु उन्होंने भारत के साथ क्रिकेट कूटनीति (Cricket Diplomacy) के माध्यम से संवाद की शुरुआत की। 1987 में जिया–उल–हक भारत में एक टेस्ट मैच के दौरान राजीव गांधी से मिले कृ यह "शांति के इशारे" के रूप में देखा गया।

1990 के दशक में कश्मीर उग्रवाद का उदयः– 1990 के दशक में पाकिस्तान ने "प्रॉक्सी वॉर" के रूप में आतंकवाद को राज्य–नीति का हिस्सा बना लिया। कश्मीर में आतंकवाद के प्रसार ने दोनों देशों के बीच विश्वास को समाप्त कर दिया।

लाहौर समझौता (1999)ः– अटल बिहारी वाजपेयी ने बस–कूटनीति के माध्यम से नई शुरुआत की। उन्होंने फरवरी 1999 में लाहौर समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें परमाणु संयम और द्विपक्षीय वार्ता पर सहमति हुई।

परिणामः–लाहौर समझौते ने दोनों देशों में विश्वास की नई उम्मीद जगाई, किंतु कुछ ही महीनों बाद कारगिल युद्ध (1999) ने उस विश्वास को तोड़ दिया। पाकिस्तानी सेना द्वारा घुसपैठ ने यह सिद्ध किया कि पाकिस्तान की सेना और उसकी सरकार शांति प्रक्रिया में एकमत नहीं हैं।

**चतुर्थ चरणः आगरा शिखर सम्मेलन और आतंकवाद की छाया (2001–2008)**

आगरा शिखर सम्मेलन (2001)ः–प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और जनरल परवेज मुशर्रफ के बीच

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in September 2025

आगरा वार्ता हुई। इसमें कश्मीर, आतंकवाद और आर्थिक सहयोग पर चर्चा हुई। हालाँकि यह वार्ता औपचारिक समझौते के बिना समाप्त हो गई, परंतु इससे यह स्पष्ट हुआ कि संवाद की आवश्यकता दोनों पक्ष महसूस करते हैं।

मुंबई आतंकी हमला (2008):–26/11 मुंबई हमला भारत–पाक शांति प्रक्रिया का सबसे बड़ा झटका था। इस हमले ने भारत की जनता और सरकार दोनों में पाकिस्तान के प्रति गहरा अविश्वास पैदा किया। इसके बाद सभी उच्चस्तरीय संवाद ठप हो गए।

**पंचम चरणः सीमित संवाद और मनमोहन सिंह युग (2009–2013)**

डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार ने "Composite Dialogue" की पुनः शुरुआत की, जिसमें व्यापार, सीमा, आतंकवाद, और सांस्कृतिक संपर्क जैसे आठ मुद्दे शामिल थे। 2004–2008 के बीच कुछ सकारात्मक परिणाम दिखे–सीधी बस सेवा और रेल संपर्क, व्यापारिक संबंधों में वृद्धि, लोगों के आदान–प्रदान में नरमी। लेकिन 2008 के बाद आतंकवाद की घटनाओं और पाकिस्तान की राजनीतिक अस्थिरता ने सभी प्रगति को समाप्त कर दिया। 2013 तक शांति प्रक्रिया लगभग निष्क्रिय हो चुकी थी।

**शांति प्रयासों की असफलता के प्रमुख कारण**

सैन्य वर्चस्वः–पाकिस्तान की विदेश नीति पर सेना का नियंत्रण रहा है, जो शांति की तुलना में संघर्ष में अपनी भूमिका को अधिक उपयोगी मानती है।

कश्मीर मुद्दे पर कठोर रुखः–दोनों देशों का "अविभाज्य रुख" किसी भी समझौते को असंभव बना देता है।

आतंकवाद और चरमपंथः–भारत के विरुद्ध प्रायोजित आतंकवाद ने प्रत्येक संवाद को अविश्वास में बदल दिया।

घरेलू राजनीतिः–दोनों देशों में सरकारें अक्सर "राष्ट्रवाद" को आंतरिक समर्थन के साधन के रूप में प्रयोग करती रही हैं।

अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेपः–अमेरिका और चीन जैसे देशों की नीतियाँ कभी–कभी शांति प्रक्रिया के लिए बाधा बनीं।

**आंशिक उपलब्धियाँ**

- लाहौर बस सेवा और व्यापारिक संपर्कों का आरंभ।
- सीमा–विराम (2003) का आंशिक पालन।
- सांस्कृतिक और जन–स्तरीय संवाद।

इन आंशिक सफलताओं ने यह प्रमाणित किया कि भारत–पाक संवाद असंभव नहीं, बल्कि परिस्थितिजन्य है।

**नई पृष्ठभूमिः 2014 का राजनीतिक मोड़** (Political Shift after 2014)

2014 में भारत में नरेंद्र मोदी सरकार के गठन के साथ विदेश नीति में निर्णायक बदलाव आया। मोदी सरकार ने "शांति और शक्ति दोनों" को संतुलित दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया, जहाँ संवाद की पहल और सुरक्षा–प्रेरित कूटनीति दोनों साथ–साथ चलें। मोदी की शपथ–ग्रहण समारोह में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को आमंत्रित किया गया, जो एक प्रतीकात्मक शांति संकेत था। हालाँकि शुरुआती कुछ महीनों में संवाद की संभावनाएँ दिखाई दीं, लेकिन 2015–16 से पाकिस्तान में आतंकवादी संगठनों की गतिविधियों और सीमा उल्लंघनों ने संबंधों को फिर तनावपूर्ण बना दिया। भारत ने इस दौर में यह स्पष्ट कर दिया कि वह आतंकवाद और संवाद को एक साथ स्वीकार नहीं करेगा, यह नीति बाद में "Zero Tolerance Doctrine" के रूप में विकसित हुई।

**पठानकोट और उरी हमलेः विश्वास का अंत**

पठानकोट हमला (2016):– जनवरी 2016 में पठानकोट एयरबेस पर हुए हमले ने हाल ही में शुरू हुई विदेश सचिव स्तर की वार्ता को बाधित कर दिया। भारत ने पाकिस्तान को सबूत सौंपे, किंतु उसकी ओर से कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। यह वह क्षण था जब भारत ने "आतंकवाद–संवाद अलगाव नीति" को औपचारिक रूप से अपनाया।

उरी हमला और सर्जिकल स्ट्राइक (सितंबर 2016):– उसी वर्ष सितंबर में उरी में भारतीय सैनिक शिविर पर हमला हुआ, जिसमें 19 जवान शहीद हुए। भारत ने पहली बार "सर्जिकल स्ट्राइक" के माध्यम से पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी ठिकानों पर हमला किया। यह कदम भारत की कूटनीति में ऐतिहासिक मोड़ था, अब भारत ने केवल कूटनीतिक विरोध नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष कार्रवाई का विकल्प चुना।

इन घटनाओं के बाद शांति प्रक्रिया लगभग समाप्त हो गई। पाकिस्तान ने इसे "भारतीय आक्रामकता" कहा, जबकि भारत ने इसे "आत्मदृरक्षा" का अधिकार बताया।

**पुलवामा हमला और बालाकोट एयरस्ट्राइक (2019): निर्णायक परिवर्तन**

फरवरी 2019 में पुलवामा में हुए आत्मघाती हमले में 40 से अधिक सीआरपीएफ जवान शहीद हुए। जिम्मेदारी पाकिस्तान–स्थित आतंकवादी संगठन जैश–ए–मोहम्मद ने ली। भारत ने इस हमले के बाद बालाकोट एयरस्ट्राइक कर पाकिस्तान के भीतर आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को निशाना बनाया। यह घटना न केवल सैन्य बल्कि कूटनीतिक स्तर पर भी भारत की विदेश नीति की परिपक्वता का संकेत थी। भारत ने पहली बार स्पष्ट कर दिया कि वह अब केवल "Dialogue–Driven State" नहीं, बल्कि "Action–Driven Power" है। संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका, फ्रांस और कई यूरोपीय देशों ने भारत के रुख का समर्थन किया। यह पाकिस्तान के लिए कूटनीतिक अलगाव की शुरुआत थी।

**अनुच्छेद 370 का निरस्तीकरण और उसके परिणाम**

5 अगस्त 2019 को भारत ने जम्मू–कश्मीर से विशेष राज्य का दर्जा समाप्त कर दिया। यह कदम भारत की आंतरिक नीति का हिस्सा था, किंतु पाकिस्तान ने इसे अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनाकर पेश किया। पाकिस्तान ने भारत के साथ सभी कूटनीतिक और व्यापारिक संबंध समाप्त करने की घोषणा की। भारत का तर्क था कि यह "संवैधानिक और प्रशासनिक सुधार" है, न कि बाहरी हस्तक्षेप का विषय। अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने अधिकांशतः भारत के रुख का समर्थन किया। अमेरिका, रूस और फ्रांस ने इसे भारत का "आंतरिक मामला" कहा, जबकि चीन और तुर्की ने पाकिस्तान का आंशिक समर्थन किया। इस घटना के बाद भारत–पाक संबंध अपने न्यूनतम स्तर पर पहुँच गए। SAARC सम्मेलन स्थगित हो गए, और दोनों देशों के राजनयिक स्तर घटाकर "चार्ज डी अफेयर" तक सीमित कर दिए गए।

**अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की कूटनीति और पाकिस्तान का अलगाव**

भारत ने 2014–2024 के दशक में अपनी कूटनीतिक स्थिति को वैश्विक स्तर पर मजबूत किया। FATF (Financial Action Task Force):- भारत ने पाकिस्तान को आतंकवाद के वित्तपोषण के लिए जिम्मेदार ठहराया। 2018–2022 तक पाकिस्तान "ग्रे लिस्ट" में रहा।

संयुक्त राष्ट्र में कूटनीतिक जीतः– पाकिस्तान ने बार–बार कश्मीर मुद्दे को यूएन में उठाया, लेकिन हर बार उसे समर्थन नहीं मिला। QUAD और Indo–Pacific रणनीतिः– भारत ने जापान, ऑस्ट्रेलिया, और अमेरिका के साथ गठबंधन मजबूत किया, जिससे पाकिस्तान की क्षेत्रीय प्रासंगिकता और घट गई। भारत ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि वह अब दक्षिण एशिया में "Peace–Dependent State" नहीं, बल्कि "Security–Sovereign Power" है।

सीमावर्ती नीति और संघर्षविराम समझौताः– फरवरी 2021 में भारत और पाकिस्तान ने सैन्य अधिकारियों के स्तर पर सीमा–विराम पुनःस्थापन समझौते की घोषणा की। यह एक अप्रत्याशित, परंतु महत्वपूर्ण विकास था। दोनों देशों ने घोषणा की कि वे नियंत्रण रेखा (LoC) पर 2003 के समझौते का पालन करेंगे। यह पहल बताती है कि यद्यपि राजनीतिक संवाद ठहर गया है, परंतु दोनों देशों की सैन्य संस्थाएँ सीमित स्थिरता बनाए रखने में रुचि रखती हैं। हालाँकि यह "शांति प्रक्रिया" का पुनर्जन्म नहीं था, फिर भी यह भविष्य के लिए एक आधार बना।

**प्रमुख चुनौतियाँ**

आतंकवाद और सैन्य वर्चस्वः–पाकिस्तान की विदेश नीति अभी भी सेना और खुफिया एजेंसियों के नियंत्रण में है। भारत के लिए यह सबसे बड़ी बाधा है क्योंकि कोई भी नागरिक सरकार दीर्घकालिक संवाद की गारंटी नहीं दे सकती।

कश्मीर मुद्दाः–कश्मीर भारत के लिए संवैधानिक एकता का प्रश्न है, जबकि पाकिस्तान के लिए "अधूरा एजेंडा"। दोनों देशों की वैचारिक स्थिति में यह मूल विरोध किसी भी स्थायी समाधान को असंभव बनाता है।

जन–भावनाएँ और राष्ट्रवादः–भारत और पाकिस्तान दोनों में "राष्ट्रवाद" राजनीतिक समर्थन का मुख्य आधार बन चुका है। किसी भी सरकार के लिए "संवाद" की पहल को जनता के बीच न्यायोचित ठहराना कठिन हो गया है।

चीन–पाक गठबंधन और सामरिक भू–राजनीतिः CPEC (China–Pakistan Economic Corridor) और पाकिस्तान की "चीन–निर्भर विदेश नीति" भारत के लिए एक नई रणनीतिक चुनौती है। भारत इसे अपने भू–राजनीतिक हितों के विरुद्ध मानता है।

जल–विवाद और सीमाई मुद्देः– इंडस वाटर ट्रीटी (1960) अब बारदृबार विवादों का कारण बन रही है। भारत ने जल प्रबंधन में अपने अधिकारों का उपयोग करना प्रारंभ किया है, जिसे पाकिस्तान "संधि–उल्लंघन" मानता है।

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यः– भारत–पाक संबंध अब केवल द्विपक्षीय नहीं, बल्कि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखे जाते हैं। अमेरिका ने अब "India–Centric" दृष्टिकोण अपनाया है। रूस दोनों देशों के साथ संतुलन बनाए रखने का प्रयास करता है। चीन, पाकिस्तान का पारंपरिक सहयोगी बनकर भारत के लिए रणनीतिक चुनौती बना हुआ है। खाड़ी देशों (UAE, सऊदी अरब) ने दोनों के बीच मध्यस्थता की इच्छा दिखाई है। इस प्रकार, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रभाव बढ़ा है जबकि पाकिस्तान की प्रासंगिकता कम होती जा रही है।

**जन–स्तरीय संबंध और सांस्कृतिक कूटनीति :–** यद्यपि राजनीतिक संबंध शून्य हैं, परंतु जनतादृस्तर पर संवाद की संभावना अब भी जीवित है। साहित्य, संगीत, फिल्म और सोशल मीडिया के माध्यम से दोनों देशों के युवाओं के बीच संवाद जारी है। "क्रिकेट कूटनीति" और सांस्कृतिक आयोजनों ने यह सिद्ध किया है कि दोनों समाजों में शांति की इच्छा आज भी मौजूद है। भारत सरकार की "Soft Power Diplomacy", जैसे International Yoga Day, Indian Council for Cultural Relations (ICCR), और Digital Outreach, ने भारत की वैश्विक छवि को सकारात्मक बनाया है, जिससे पाकिस्तान की "आतंक–केन्द्रित" छवि के विपरीत संतुलन बना है।

समग्र मूल्यांकनः– 2014 से 2024 का दशक भारत–पाक शांति प्रक्रिया के लिए "संवाद से सुरक्षा" की ओर संक्रमण का प्रतीक है। भारत की नीति अब "Peace through Strength" के सिद्धांत पर आधारित है, जहाँ संवाद तभी संभव है जब सुरक्षा सुनिश्चित हो। भारत–पाक संबंधों में शांति की संभावनाएँ तब तक सीमित रहेंगी जब तक पाकिस्तान आतंकवाद, धार्मिक उग्रवाद और सैन्य नियंत्रण से बाहर नहीं निकलता। फिर भी, यह कहना गलत होगा कि शांति असंभव है कृ 2021 का सीमादृविराम और जनतादृस्तरीय सांस्कृतिक संबंध यह संकेत देते हैं कि संवाद की खिड़की अब भी बंद नहीं हुई है, केवल छोटी हो गई है।

**भविष्य की संभावनाएँ**

भारत और पाकिस्तान के बीच शांति की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। हालाँकि वर्तमान परिदृश्य निराशाजनक प्रतीत होता है, फिर भी इतिहास यह प्रमाणित करता है कि सबसे तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी संवाद की संभावनाएँ बनी रहती हैं।

जनता–स्तरीय संवादः– दोनों देशों के नागरिक स्तर पर सांस्कृतिक, शैक्षिक और सामाजिक संवाद शांति प्रक्रिया की सबसे स्थायी नींव हो सकती है। भारत–पाक छात्र विनिमय कार्यक्रम, मीडिया सहयोग और खेलदृकूटनीति (Cricket Diplomacy) जैसी पहलें विश्वास बहाली का माध्यम बन सकती हैं।

क्षेत्रीय आर्थिक सहयोगः– BIMSTEC, SCO और IORA जैसे मंच भारत–पाक के लिए आर्थिक साझेदारी के वैकल्पिक मंच प्रदान कर सकते हैं। यदि दोनों देश अपने व्यापारिक हितों को सुरक्षा चिंताओं से अलग रख सकें, तो साझा विकास के माध्यम से शांति को मजबूती मिल सकती है।

तकनीकी और पर्यावरणीय सहयोगः–जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन, और स्वास्थ्य जैसे गैरदृराजनीतिक क्षेत्रों में सहयोग से विश्वास का माहौल बन सकता है। उदाहरणतः 2020 में COVID–19 महामारी के दौरान दक्षिण एशियाई स्वास्थ्य सहयोग पर चर्चा एक संभावित प्रारंभिक बिंदु हो सकती थी।

अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता की सीमित भूमिकाः– यद्यपि भारत सदैव "द्विपक्षीय समाधान" की नीति पर अडिग रहा है, परंतु कुछ ज्तंबादृप्ट संवादों में तीसरे पक्ष की मध्यस्थता, विशेष रूप से संयुक्त अरब अमीरात जैसे तटस्थ देशों की भूमिका भविष्य में सहायक हो सकती है।

नीतिगत सुझावः– भारत–पाक शांति प्रक्रिया को पुनर्जीवित करने के लिए कुछ ठोस नीतिगत कदम आवश्यक हैं, जिन्हें निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है,

सुरक्षा और संवाद के बीच संतुलनः– भारत को आतंकवाद पर कठोर रुख बनाए रखते हुए सीमित, व्यावहारिक संवाद की संभावना खुली रखनी चाहिए। संवाद को केवल उच्चस्तरीय राजनीतिक वार्ताओं तक सीमित न रखकर Track–II और Track–III Diplomacy को सक्रिय किया जा सकता है।

आतंकवाद–निरोधक सहयोगः–यदि पाकिस्तान अपने भीतर आतंकवादी ढाँचों को नियंत्रित करने की ठोस पहल करता है, तो भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसे "शांति सहयोगी" के रूप में अवसर देना चाहिए। FATF जैसी संस्थाओं के दबाव में यह संभव हो सकता है।

व्यापार और निवेश संपर्कों का पुनर्निर्माणः– भारत–पाक सीमा व्यापार (Attari–Wagah Trade Route) को सीमित वस्तुओं के माध्यम से पुनः शुरू किया जा सकता है, विशेष रूप से दवाइयाँ, खाद्यान्न, और कृषि उत्पाद। यह "Economic Interdependence" का मॉडल शांति प्रक्रिया के लिए एक स्थायी आधार बन सकता है।

सांस्कृतिक कूटनीति और शिक्षाः– साहित्य, सिनेमा, संगीत, और शिक्षा आदान–प्रदान से दोनों देशों के युवा पीढ़ी में नई समझ विकसित हो सकती है। "Indo–Pak Cultural Forum" जैसे मंचों को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए।

सीमा पर स्थायित्व और पारदर्शिताः–2014–2024 के बीच सीमा–विराम उल्लंघन सबसे बड़ी समस्या रही। भारत और पाकिस्तान को LoC पर संयुक्त निगरानी प्रणाली (Joint Mechanism) पर विचार करना चाहिए, जिससे सैनिक टकराव की संभावना घटे।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग का संतुलित उपयोगः–भारत को अपने वैश्विक मित्र देशों (अमेरिका, फ्रांस, UAE) के माध्यम से पाकिस्तान को विश्वास दिलाना चाहिए कि भारत की "No&Dialogue Without Terrorism Control" नीति शांति–विरोधी नहीं, बल्कि स्थायित्व–उन्मुख है।

**सामरिक और राजनीतिक वास्तविकताएँ**

भारत–पाक शांति प्रक्रिया की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि दोनों देशों में "शांति" का राजनीतिक मूल्य अक्सर "कमजोरी" के रूप में देखा जाता है। पाकिस्तान की आंतरिक राजनीति में सेना और चरमपंथी समूहों का प्रभाव इतना गहरा है कि वहाँ किसी भी शांति पहल को "भारत–समर्थक नीति" कहकर खारिज कर दिया जाता है। भारत में भी आतंकवादी हमलों की घटनाओं के बाद जनता के भीतर "कठोर प्रतिक्रिया" की मांग बढ़ जाती है, जिससे सरकारों के लिए संवाद का औचित्य कमजोर पड़ जाता है। इसलिए, शांति प्रक्रिया को केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है।

दीर्घकालिक दृष्टिकोणः– भारत–पाक शांति का भविष्य तभी सुरक्षित हो सकता है जब दोनों देश तीन सिद्धांतों को स्वीकार करें, सुरक्षा के बिना शांति संभव नहीं, परंतु संवाद के बिना सुरक्षा स्थायी नहीं। कश्मीर समस्या का समाधान केवल हिंसा से नहीं, बल्कि पारस्परिक यथार्थ–स्वीकार से संभव है। आर्थिक सहयोग और मानवीय संबंध किसी भी राजनीतिक विवाद से अधिक दीर्घकालिक शक्ति रखते हैं। भारत की विदेश नीति में यह दृष्टिकोण पहले से स्पष्ट हो चुका है कि "शांति तभी टिकाऊ है जब वह शक्ति के आधार पर निर्मित हो।" इसीलिए भारत अब "Reactive Diplomacy" से "Proactive Diplomacy" की ओर बढ़ चुका है, जहाँ वह शांति को भी अपने हितों की दृष्टि से देखता है।

**निष्कर्ष**

भारत–पाक शांति प्रक्रिया 1947 से अब तक कई उतार–चढ़ाव से गुजरी है। जहाँ एक ओर ताशकंद, शिमला और लाहौर समझौते ने आशा की किरण जगाई, वहीं 1999 का कारगिल, 2008 का मुंबई हमला और 2019 का पुलवामा हमला उस आशा को निराशा में बदलते रहे। 2014–2024 का दशक इस शृंखला में सबसे निर्णायक सिद्ध हुआ, क्योंकि इस काल में भारत ने अपनी नीति को शांति–निर्भरता से सुरक्षा–स्वायत्तता की दिशा में मोड़ दिया। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया कि शांति और संवाद तभी संभव हैं जब पाकिस्तान आतंकवाद और उग्रवाद के ढाँचों को समाप्त करे। पाकिस्तान की घरेलू राजनीतिक अस्थिरता और सैन्य वर्चस्व ने उसकी विश्वसनीयता को कमजोर किया है। वहीं भारत की नीति, वैश्विक नेतृत्व और रणनीतिक संतुलन ने उसे अंतरराष्ट्रीय समर्थन दिलाया है।

भविष्य में शांति तभी संभव है जब दोनों देश "शक्ति के संतुलन के बजाय हितों के संतुलन" पर आधारित दृष्टिकोण अपनाएँ। शांति का अर्थ केवल युद्धदृविराम नहीं, बल्कि स्थायी विश्वास निर्माण है, और यह तभी संभव है जब जनता, नेतृत्व, और अंतरराष्ट्रीय समुदाय कृ तीनों स्तरों पर संवाद का वातावरण पुनः स्थापित हो।

**संदर्भ सूची**

1. Bajpai, K. (2015). India Versus Pakistan: Why Can't We Just Be Friends\ Penguin Books.
2. Basrur, R. (2018). South Asia's Nuclear Security Dilemma: India, Pakistan, and China- Routledge.
3. Fair, C. C. (2014). Fighting to the End: The Pakistan Army's Way of War. Oxford University Press.

4. Ganguly, S. (2022). India–Pakistan Relations: Past, Present, and Prospects. Cambridge University Press.
5. Jacob, H. (2019). Line on Fire: Ceasefire Violations and India–Pakistan Escalation Dynamics. OUP.
6. Pant, H. V. (2019). Indian Foreign Policy: An Overview. Manchester University Press.
7. शर्मा, के. (2018). भारतीय विदेश नीति और दक्षिण एशिया. नई दिल्लीः नीति प्रकाशन।
8. मिश्रा, एस. (2019). भारतदृपाक संबंधों का समकालीन विश्लेषण. लखनऊः भारतीय अध्ययन प्रकाशन।
9. वर्मा, जी. (2020). आधुनिक विश्व राजनीति और भारत की भूमिका. वाराणसीः ज्ञानगंगा पब्लिकेशन।
10. चौधरी, पी. (2021). भारतदृपाक संबंध और कश्मीर समस्या. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।
11. द्विवेदी, ए. (2022). दक्षिण एशिया में भारत की कूटनीति. भोपालः नीति संवाद प्रकाशन।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY